International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, Juanuary-June 2015, Submitted in February 2015, iajesm2014@gmail.com

किसानों की मुद्रादायिनी सब्जियों की कृषि

डॉ मदन लाल, प्राचार्य एवं व्याख्याता भूगोल, गुरुनानक कन्या महाविद्यालय, गजसिंगपुर।
डॉ हरीश कंसल, प्राचार्य, विनायक महाविद्यालय, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध का परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है। खाद्यान्न के मामले में भारत आत्मनिर्भर है। सब्जी उत्पादन में हमारा देश विश्व में दूसरे स्थान पर है। सब्जियों का महत्व आदिकाल से ही मानव जीवन में समझा जाता रहा है। भारतीय आहार में 8 से 10 प्रतिशत सब्जियाँ होती है। आहार विशेषज्ञों के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 280 ग्राम साक–सब्जी खाने की सिफारिश करते है जबकि हमारे देश में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 140 ग्राम ही है जो सिफारिश की आधी है। साक–सब्जी प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन इत्यादि का अच्छा स्त्रोत है। मानव स्वास्थ्य, सौन्दर्य, पर्यावरण शुद्धता एवं आर्थिक दृष्टि से साक–सब्जियों की महत्ती भूमिका है।

हनुमानगढ़ जिले में सब्जी उत्पादन की भौगोलिक दशाएं अनुकूल है। संगरिया, टिब्बी, हनुमानगढ़, पीलीबंगा का समतल मैदान, उपजाऊ मृदा, मीठा जल, ट्यूबवैल सुविधा, यातायात सुविधा, पर्याप्त जनसंख्या, सरकारी सुविधाएं एवं बीचों बीच में गुजरती घग्घर नदी (नाली) इन सब घटकों से यहां भिन्न–भिन्न प्रकार की साक–सब्जी की खेती यहां का कृषक लम्बे अरसे से करता आया है। हनुमानगढ़ जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 9656.09 वर्ग किलोमीटर है। जनसंख्या वर्ष 2011 में 1774692 थी। जनघनत्व जिले का 184 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। यहां की मृदा एल्युवियल प्रकार की है। यहां की सामान्य वर्षा 253.7 मिलीमीटर एवं तापमान ग्रीष्म ऋतु में 48^0 सेन्टिग्रेड (अधिकतम) व शीतकाल में 2^0 सेन्टिग्रेड (न्यूनतम) रहता है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

सब्जी की कृषि से प्रति इकाई अधिक उत्पादन, पोषाहार सुरक्षा, रोजगार का हल, कृषि विविधीकरण, मृदा उर्वरता में वृद्धि साग–सब्जियों का जीवन में बहुउपयोग पर्यावरण शुद्धता, सौंदर्य, कच्चा माल, अधिक लाभ इत्यादि प्राप्त होने के कारण यहां का कृषक साक–सब्जी की खेती की ओर आकर्षित हुआ है।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

हनुमानगढ़ जिले में उद्यान विभाग 1997 से उद्यानिकी फल–फूल सब्जियों को बढ़ावा देता आ रहा है। जिले का आधा भाग सिंचाई से वंचित है अथवा जल की कमी है इस हेतु जल बचत अति आवश्यक है। बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली, फव्वारा सिंचाई प्रणाली, पक्की डिग्गी, सौलर पम्प सैट इत्यादि के उपयोग से जल बचत होती है। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे–वैसे कृषि जोतो का आकार घट रहा है। अतः विस्तृत खेती का रकबा कम और लघु कृषि का रकबा ज्यादा है। लघु कृषि में सघन कृषि द्वारा एवं वर्ष में तीन–तीन उपजें लेकर ही बचत कर सकते हैं एवं कृषि के साथ–साथ मधुमक्खी पालन, पशुपालन, मुर्गीपालन, पौधशाला, डेयरी, मत्स्यपालन इत्यादि सहायक क्रियाऐं कर कृषक अधिक से अधिक मुनाफा कमा सकता है। सब्जी की कृषि ही ऐसा कर्म है जो इन परिस्थितियों में जिले में उचित बैठता है। जिले के घग्घर बेल्ट में सब्जी की खेती प्रचुर मात्रा में होती है जिले के दक्षिणी भाग नोहर–भादरा–रावतसर तहसीलों में सब्जी की खेती विरल क्षेत्र में होती है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. साक–सब्जियों का क्षेत्रीय विकास एवं सम्भावनाओं का अध्ययन।
2. सब्जियों की खेती के विभिन्न घटकों का विश्लेषण करना।
3. जिले की खेती के लाभकारी पहलू का अध्ययन करना।
4. साक–सब्जी की खेती हेतु उपयुक्त सुझाव देना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

हनुमानगढ़ जिले में सब्जी उत्पादन की अपार सम्भावनाएं है। जिले की उत्तरी चार तहसीलों संगरिया, हनुमानगढ़, टिब्बी एवं पीलीबंगा में उपजाऊ मृदा एवं मीठा जल इत्यादि की सुविधा एवं दक्षिणी की तीन तहसीलों रावतसर, नोहर एवं भादरा में अधिकाशं रेतीली भूमि एवं जलाभाव में ड्रिप फव्वारा एवं नवीन तकनीकी का प्रयोग एवं शुष्क सघन सब्जी का उत्पादन किया जा सकता है। सब्जियां ही ऐसा स्रोत है जिनसे वर्ष में तीन–तीन फसलें ले सकते है। बढ़ती जनसंख्या, घटता जोतो का आकार, मंहगाई, बेरोजगारी इत्यादि सब्जी उत्पादन ही कृषक के लिए विकल्प हो सकता है। क्योंकि प्रति इकाई अधिक उत्पादन, पोषाहार सुरक्षा, कृषि विशेषीकरण, भूमि की उर्वरता में वृद्धि, अधिक आय, सरकारी अनुदान इत्यादि ने कृषकों को आकृष्ट किया है। सब्जी उत्पादन के साथ–साथ मत्स्य पालन, मुर्गीपालन, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, डेयरी, नर्सरी, बीज निर्माण इत्यादि सहक्रियाऐं कर अधिक लाभ ले सकते हैं।

शोध क्षेत्र में सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के लिए सड़कों का विकास, मंडियों का विकास, पैंकिग व प्रसंस्करण इकाईयों को प्रोत्साहन, कोल्डस्टोरेज एवं अन्य सरकारी सहायता का लाभ देकर सब्जी की खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है एवं उत्पादित सब्जियों को आवश्यकतानुसार तथा उचित समय पर मांग एवं पूर्ति के सिद्धान्त के अनुसार विक्रय कर कृषक अधिक से अधिक लाभ कमा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शुक्ल परशुराम : भारत के औषधीय वृक्ष, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर।
2. कुमार प्रमिला : कृषि भूगोल हिन्दी ग्रंथ अकादमी, मध्यप्रदेश।
3. सहायक निदेशक : उधान विभाग हनुमानगढ़ ।
4. निदेशक जिला सांख्यिकी विभाग हनुमानगढ़।
5. चन्द्रा, विरेन्द्र एवं पाण्डे, मुकुल चन्द 2006: जड़ी बूंटियों की खेती, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली।
6. दास, कुन्तल 2010 : मेडिसिनल प्लान्टस, कल्याणी पब्लिकेशर्स, लुधियाना।
7. दास, गुप्ता ए. के. 1973 : स्टडीज इन युटिलाइजेशन ऑफ एग्रीकल्चर लैण्ड एण्ड इकोनोमिक्स डेवेलोपमेन्ट इन इंडिया, नई दिल्ली।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY